श्रीमते रामानुजाय नमः।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥१॥

विवाह लग्न विवाद

अर्थात्

गोरज लग्न निर्णयः

जिसको

अजमेर वास्तव्य ज्योतिर्विशारद
पण्डित श्रीवंशीधरात्मज
अवैतनिक उपदेशक श्रीभारतधर्म्म महामण्डल
पण्डित नारायणदास ज्योतिर्विद् ने

विविध ग्रन्थोंसे सम्पादित कर प्रकाशित किया।

गोविन्द प्रेस।

नं० ४०२ अपर चितपुर रोड कलकत्ता में
श्रीअतीश चन्द्र राय द्वारा मुद्रित।

मूल्य ﴿) आना।



श्रीमतेरामानुजाय नमः।

विवाह लग्न विवाद प्रारम्भ।

तत्रादौ ग्रन्थनिर्विघ्नसमाप्तयेऽभीष्ट देवता नमस्कार रूपं मङ्गलाचरणमभिधीयंचाह॥

ईश्वरीं श्वेतवर्णाभां भक्तानां सर्वदां शिवाम्।
मुदार्णव युतां वन्दे वन्दनीय पदाम्बुजाम्॥ १॥

समस्त सज्जनोंको ज्ञात होकि सम्वत् १९६७ आषाढ़ कृष्णा २ के दिवस जो विवाह लग्न चण्डू आदि पञ्चाङ्गोंमें गोरज लग्न लिखा था, और रात्रि लग्न मीन लिखा था। इन लग्नोंके विषय पर अजमेर नगरमें बीकानेर निवासी पं० लक्ष्मीनारायणजी (करीड़ु पुष्करणे) ब्राह्मण और कृष्णगढ़ निवासी श्रीमान् ज्योतिप्ररत्न पं० शिवदासजी का तो यह मत था कि गोरज लग्न सर्व दोष रहित उत्तम है। और अजमेरस्थ पण्डितोंका तथा मेरा यह पक्ष था कि गोरजकी अपेक्षा मीन लग्न ठीक है। इस पर हम लोगोंमें परस्पर विवाद हो चला तो गोधूलि लग्न करानेवाले पण्डित (लक्ष्मीनारायणजी तथा पं० शिवदासजीने) मीन लग्नमें ६ दोष बतलाये जिसके प्रश्नोत्तर दैवज्ञोंके मनोरञ्जनार्थं नीचे प्रकाशित करता हूं।

मीन लग्नके आक्षेपोंका क्रमसे उत्तर।

प्रश्न १।

चन्द्रमासे भौम सप्तम होनेसे यामित्र दोषके कारणसे त्याज्य है।

प्रथम प्रश्नका उत्तर ।

यह दोष तो गोरजमें भी विद्यमान है क्यों कि गोरजके समय चन्द्रमा मकर राशि का है और भौम कर्क राशिका होनेसे चन्द्रसे भौम सप्तम है सो गोरज लग्नके समयमें भी यामित्र दोष कारक है और लग्नमें तो चन्द्रमा एकादशस्थ (ग्यारहवें) होनेसे सर्व दोष निवारक हैं। यथा नारद संहितायाम्।--

ये दोषास्तान्निहंत्येव यदैकादशगः शशी ।
नाशयत्यखिलान् दोषान् यदैकादशगोरविः ॥ १ ॥

"भावार्थ"—चन्द्र तथा सूर्य ग्यारहवें स्थानमें हों तो सर्व दोष निवारक हैं। अथवा मु० चि०

सर्वे दोषानाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः—

खोटे मुहूर्तसे पैदा हुए दोष तथा नवमांशोंसे पैदा हुए दोष अथवा ग्रह जनित सम्पूर्ण दोषोंको लाभस्थानमें स्थित चन्द्रमा नाश करता है। अतः भौम सप्तमकृत् यामित्र दोष मानना तो गोरजमें ही घटता है कारण उस (गोरज) में चन्द्रमा ग्यारहवें नहीं आता।

प्रश्न ॥ २ ॥ लग्नसे बृहस्पति सप्तम है सो त्याज्य है। उ० २ प्र० का ॥

संपूर्ण ग्रह सप्तमत्याज्य हैं परन्तु चन्द्र और गुरुको मु० चि० की टीकामें ही लिखा है कि "अजगुरुसमौ" इस वाक्यसे चन्द्र और गुरु सम फल देते हैं। यथा—

लग्नेट् लग्नांशनाथो वाचापगः केन्द्रगोऽपिवा ।
राशिं निहन्ति दोषाणा मिन्धनानीव पावकः ॥१॥

भावार्थ—लग्नका पति तथा लग्ननवांशकापति धनराशि

हो अथवा केन्द्र का होवे तो सर्व दोषोंके समूहोंको नाश करता है जैसे काष्ठको अग्नि नष्ट कर देती है।

इन प्रमाणसे भी लग्नपति गुरु है सो केन्द्रमें होनेसे शुभ फल-कारक है।

प्रश्न ३। लग्नसे सूर्य्य चतुर्थ है सो त्याज्य है। उ० ३ प्र० का।

प्रथम तो सूर्य्य चतुर्थ होनेसे लग्न भङ्ग कारक नहीं जैसे "व्यये शनिः खेति" इसमें चतुर्थ सूर्यका दोष सर्वथा नहीं यदि इसका दोष मानते होतो देखो आर्ष प्रमाण "केन्द्रे कोणे जीव आये रवौवा" तथा बुध केन्द्र गत होनेसे सर्व दोष नाशक है।

गुरुरेकोऽपि केन्द्रस्थः शुक्रोवा यदिवा बुधः।
दोषसंघान्निहन्त्येव केशरीविभसंहतिम्॥ १॥

अथवा॥ "हरेत्सौम्य शुक्रो" इत्यादि प्रमाणोंसे चतुर्थ सूर्य्यका दोष बताना केवल विवाद मात्र हो है नकि दोष माना जावे।

प्र० ४। लग्नसे शुक्र तृतीय है सो त्याज्य है उ० ४ प्र० का

शुक्र तृतीयका दोष अवश्य है परन्तु यहां शुक्र स्वराशिका होनेसे उक्त दोष कारक नहीं तथापि आप इसे अशुभ मानते हो तो भी तृतीयस्थ शुक्रका फल वैधव्यादि योग कारक नहीं देखो।

दुश्चिक्यगते तु कन्या वाग्दाङ्गतु कनीयसं भजते।

भावार्थ—विवाह लग्नसे तृतीय भावमें यदि शुक्र होवे तो वह कन्या तीजे वर्षमें पतिके छोटे भाई अर्थात् देवरको भजती है देवर होनेपर तृतीय शुक्रको त्यागना योग्य है। यदि देवर न होवे तो फिर तृतीय शुक्रका दोष मानना व्यर्थ है तथापि आप का दुराग्रह ही है तो वृहत् संहिता की वचन देखिये। यथा—

सूर्य्येन्दु भौम गुरु शुक्र बुधास्तृतीये कुर्य्युर्वधूं बहुसुतां धनभागिनीञ्च" ।

भाषा—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, वृहस्पति, शुक्र, बुध इनमेंसे कोई ग्रह तृतीय स्थानमें होवे तो कन्या बहु पुत्र धनवाली होती है। तथा फिर भी सन्तोष न हुआ होवे तो पीयूष धारामें व्यासकी वचनोंको भी देखें।

"शुक्रेण गुरुणावाऽपि संयुतं दृष्ट मेवच ।
दशयोग समायुक्त मपि लग्नं शुभावहम्" ॥ १ ॥

गुरु शुक्र एक स्थानमें स्थित हो अथवा परस्पर दृष्टि होवे तो दश दोषयुक्त लग्न होने पर भी शुभ फल देता है। अतः शुक्रका दोष सर्वथा नहीं फिर भी स्वराशिका होनेसे उत्तम फल करता है।

प्र० ५। केतु नवममें है सो लग्न भङ्गद है ? उ० ५ प्र०का।

केतु नवमका दोष मूल वाक्योंमें नहीं है देखो मु० चि०।

"व्यये शनिः खेऽवनिज स्तृतीये,
भृगुस्तनौ चन्द्रखलान शस्ताः ।
लग्नेट् कविग्लौश्चरिपौमृतौग्लौ-
र्लग्नेट् शुभारासमदेच सर्वे ॥ १ ॥

भावार्थ—शनि द्वादश भौम दशम तृतीय शुक्र लग्नमें चन्द्रमा तथा क्रूर ग्रह न हो, अथवा लग्नपति और भृगु तथा चन्द्रमा ६—८ स्थानमें न हो तथा लग्नेश चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र अष्टममें न हो सप्तममें कोई ग्रह न हो (गुरु चन्द्रको सप्तममें सम माने है) टीका कारने उक्त अन्य दोषोंके होनेसे लग्न भङ्गद माना है। इसके अतिरिक्त केतु जनित फिर भी दोष मानते हो तो बुध केन्द्रगत

होनेसे तथा चन्द्र ११में होनेसे सर्व दोष नाशक है। अतः केतुका अणु मात्र भी दोष मानना केवल हठ मात्र ही है। प्र० ६। मौन लग्नके समय रोग पञ्चक है सो निषिद्ध है। उ० प्र० ६ का

इस दिवस मीन लग्नके समय तक सूर्यके जो अंश गत हुए हैं इस पर रोगबाण किस प्रकारसे आता है देखिये मुहूर्त चिन्तामणिमें क्या लिखा है।

रस गुण शशि नागा व्ध्याव्य संक्रान्तियातां,
शकमितिरथ तष्टां कैर्यदा पञ्चशेषाः।
रुग नल नृप चोरा मृत्यु संज्ञश्च बाणो,
नव हृत शर शेषे शेष कैक्ये सशल्यः॥ १॥

यात संक्राम्त्यंशोमें ६।३।१।८।४ युक्त करके ९ का भाग देनेसें जहाँ ५ शेष रहे वहां पर रोग, अग्नि, नृप, चोर, मृत्युबाण जानना।

महाशयो!

उपरोक्त प्रमाणके देखनेसे रोग पञ्चकके बतानेवाले किराडूजी महाराजने तो अपनी सर्व विद्या ही व्यय कर डाली। परन्तु खेद इस बात का है कि ज्योतिषरत्न पण्डित शिवदासजी महाराजने भी रोगबाणको न देखकर केवल किराडूजीके साथ ही सम्मति दे दी और उसका तनिक भी विचार नहीं किया। प्रथम तो रोग पञ्चक आता ही नहीं यदि किराडूसम्पादोद्यानवीनपद्धतिसे आता भी होवे तो रोग पञ्चक उपनयन (जनेऊ) में निषिद्ध है नकि पाणिग्रहण (विवाह) में। यथा—

नृपाख्यं नृप सेवायां गृह गोपेऽग्नि पञ्चकम्।
याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं करग्रहे॥ १॥

हमें आश्चर्य्य इस बात का है कि ऐसी मोटी बातको आप स्वयं न देखकर दूसरे पर मिथ्या दोषारोपण करके स्वहठको सिद्ध करना उत्तम पुरुषोंका कार्य्य नहीं है। यदि किराड़जी तथा शिवदासजी महाराज मौन लग्नके समय तक रोगबाण सप्रमाण आर्ष ग्रन्थोंसे बता देवेंगे तो हम (नारायण दास) अपने लेखका पश्चात्ताप देवज्ञोंको समक्षतामें प्रगट करेंगे। नहीं तो रोगबाणके बताने मात्रसे ही विद्वानोंको ज्ञात होगया होगा कि किराड़जी तथा शिवदासजीका केवल हठ मात्र ही स्वप्रमाण है। और किसी के शुभाशुभ की ओर तनिक भी दृष्टि नहीं देना जैसे किसी कविने कहा है कि "अर्थी दोषं न पश्यति" पण्डितजी (लक्ष्मीनारायणजी शिवदासजी) महाराज ! अब भी रोगबाणको सिद्ध कर सक्ते हो क्या ? यदि रोगबाण सिद्ध नहीं कर सक्ते होतो आगे सोच विचार कर शब्द निकाला करें जिससे कि आप लोगोंका उपहास नहो।

मैं (नारयण दास) ने पण्डित लक्ष्मीनारायणजी तथा पं॰ शिव दासजीको जो जो गोरज लग्नमें दोष बताये जिन्होंमेंसे एक दो प्रश्नके उत्तर ऊट पटांग दिये सो प्रश्नोत्तर नीचे प्रकाशित करता हूं

यहां प्रश्नकर्त्ता (नारायणदास) और उत्तरदाता (लक्ष्मी नारायणजी किराड़जी तथा शिवदासजी) हैं।

गोरज लग्ने दोषाः।

प्रश्न १।

गोधूलि लग्न त्रिवर्णोंके लिये सर्वथा निषिद्ध है यदि कन्या यौवनावस्थामें प्राप्त होगई होवे और अन्य लग्न नहीं मिलते हों तब गोरज लग्न करना नहीं तो वर्णत्रयके लिये गोरज करना आर्ष प्रमाणोंसे सर्वथा निषिद्ध है। यथा ज्योतिर्निबन्धे।

षष्ठो लग्नं यदानास्ति तदा गोधूलिकं स्मृतम् ।
शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्नद्विजानां कदाचन ॥ १ ॥

तथाच मुहूर्त्तमार्त्तण्डे "गोधूलं पट्जातिकेति" मूल वचनम् । अस्योपरि टीकाकार वाक्यम् ।—

गोधूलं लग्नं सायंकाल लग्नं पट्जातिषि नौन जातौ शुभ करं प्रोक्तं न पूर्ववर्णानाम् । अपरञ्च ज्योतिर्विदाभरणे—

जिष्णुबच्च हतपच वासिनामंघ्रियोनिमुखलोकसंहतेः ।
अस्तलग्न मुक्तिं कलौबुधैरादिभूनृप विशामलंनच ।

अस्य टीका अथ गोधूलिक ग्रहणे वर्णविशेषमाह ।—

---

१ जैसे सं० १९६६ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरुवारके दिवस भी सूर्यके १८ अंश गत थे उस पर पं० शिवदासजी गोरजके समय अग्निवाण बताते रहे और मैं (नारायणदास) ने कहा कि गोरजके समय मृत्युवाण आता है परन्तु आप (शिवदासजी) उसपर एक पञ्चाग जयपुरका बताया जिसमें अग्निवाण लिखा था बस इस प्रमाणके अतिरिक्त आपके पास कोई प्रमाण न था तथापि २ दिन व्यर्थ विवाद बढ़ाते हो रहे। अन्तमें काशी निवासी सधर्म धुरन्धर दैवज्ञ वाचस्पति ज्योतिष्पार हृस्ता श्री६ श्रीविनायक शास्त्रीजीने कहा कि गोरजमें अवश्य ही मृत्यु पञ्चक १८ अंशपर आता है रात्रिको २० अंश होने पर अग्निवाण आता है तब आपको सन्तोष हुआ। परन्तु आप (ज्योतिषरत्न शिवदासजी) पञ्चांगोके भरोसे पर न रहा करें पूर्व उन्होंका विचार भी कर लिया करें जिससे कि आपका हास्य न हो ।

जिष्णुरिति जिष्णुनो इन्द्रेण हता: पक्षा: वाजा: एषान्ते गिरयस्तेषु वसन्तीत्येवंशीला स्तेषांपर्वतवासिजनानां चांघ्रियोनय: पादे जाता: शूद्रास्ते एव मुख लोका स्तेषां संहति: समूहस्याऽस्त लग्नं गोधूलिक मुदितं प्रोक्तं बुधै: सुधीभि: कलौयुगे च पुनरादिभू न्नृपविशा विप्र चत्रिय वैश्यानामलमित्यर्थं न प्रोक्त मिति शं ॥१॥

मुहूर्त्त तत्वेपि-वर्णत्रय बाह्यकोनां सर्वेषां महाशूद्र: रजक चर्मकाराद्यधमजातीनां गोरज ग्रहणम् ।

इत्यादि प्रमाणोंके अवलोकन करनेंसे गोधूलि लग्न सर्वथा मना है तो फिर गोधूलि लग्न ब्राह्मण चत्री वैश्यादि वर्णोंके क्यों होता है? यह प्रश्न किसीके पैदा होवे तो उसका निवारण भी इस प्रकारसे हैं जैसे कि भूपाल वल्लभमें लिखा है यथा—

> विप्रेषु घटिका लाभे न देयं गोरजो बुधै: ।
> संकीर्णे गोरज: शस्तं परेषु द्वितयं शुभम् ॥२॥

अन्यच्च दैवज्ञ मनोहरे ।

> लग्नशुद्धिर्यदानास्ति कन्या यौवनशालिनी ।
> तदावै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥२॥

॥ नारदेपि ॥

> प्राच्यानाञ्च कलिंगानां मुख्यं गोधूलिकं शुभम् ॥ ३ ॥

इत्यादि प्रमाणोंसे सर्व वर्णोंके तथा सर्व देश निवासियोंके लिये गोधूलि लग्न नहीं, केवल कन्या यौवनावस्थामें प्राप्त होगई हो तथा गोधूलि भङ्गद कोई ग्रह तथा अशुभ योग न हो तब द्विजातियोंको

गोरज लग्न करना। भङ्गकारक योगोमें तो गोधूलि लग्न शूद्रादिकों के ही लिये हैं। कारण उन्होंके पुनर्विवाह की प्रथा प्रचलित होनेसे यदि कन्या कुयोगोंके कारण विधवा भी होजावे तो द्वितीय वर कर लेती है.। इसीसे गोरज लग्नके विधान शास्त्रकारोंने शूद्रोंके निमित्त ही दिये हैं। उपरोक्त प्रमाणोंके देखनेसे कोई सन्देह करे कि गोधूलि लग्न फिर द्विजातियों (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य) के क्यों होता है तो जिसका समाधान यह है कि यवनोंका राज्य होने पर द्विजातियोंके विवाह समयमें नाना प्रकारके कष्ट होते थे तिस हेतु दिवा विवाह की प्रथा बन्ध हुई। दिवा विवाह करना शास्त्र सम्मत है परन्तु जबसे दिवालग्न बन्ध हुआ तबसे द्विजोंके गोरज लग्न विशेष कर होने लगा है। परन्तु विद्वानोंको उचित है कि दोष रहित गोरज लग्न करना दोषयुक्त गोरज लग्न कदापि. नहीं करना शूद्रादिकोंके तो मुख्य गोधूलि लग्न सर्व कालमें है जैसे लिखा भी है कि "नास्या ऋक्षं न तिथि करणेति" अर्थात् गोरज लग्नमें नक्षत्र तिथि करण की कुछ अपेक्षा नहीं और लग्न विचार भी नहीं करना, वार तथा नवमांश की भी चर्चा नहीं करनी दुष्ट योग भद्रा वैधृति व्यतीपात महापात अष्टम शुद्धि यामित्र दोषादिकों का विचार गोरज लग्नके समय नहीं करना। यह प्रमाण केवल गोरज लग्नको प्रशंसा कारक शूद्रादिकोंके निमित्त ही है क्योंकि शूद्रादिकोंके निमित्त नहीं होता तो व्यतीपात महापात मृत्यु पञ्चकादि महा दोषोंका देखना व्यर्थ है। केवल गोरज समयमें ही सर्व वर्णोंको पाणिग्रहण कर लेना उचित था, तो फिर विवाहमें अन्य लग्नों का विचार करना तथा रेखादि निकालना भी व्यर्थ ठहरेगा? अतः उपरोक्त विवेचनासे स्पष्ट ज्ञात होता है कि शूद्रोंके दोषयुत (अष्टम मङ्गलादि) गोरजमें पाणिग्रहण करनेसे कुछ दोष नहीं। इसके अतिरिक्त

गोरजका जो समय लिखा है "पिण्डीभूते दिनकृतेति" शीतकाल मार्गशीर्षसे ४ मासमें पिण्डाकार सूर्य हो और उष्ण काल चैत्रसे ४ मास अर्द्धास्त सूर्य बिंब आधा अस्त आधा बाह्य हो वर्षाकालमें श्रावणसे ४ मासोंमें सूर्य बिंब सर्व अस्त हो जावे उस समयको गोधूलि कहते हैं तो विचार लीजिये कि चातुर्मास तथा गुरु-शुक्रास्तादिकोंमें भी द्विजातियोंको गोधूलि समयमें पाणिग्रहण करलेना योग्य है क्या ? सो नहीं, केवल शूद्रादि वर्णोंकेही चातु-र्मासोंमें विवाह होता है(१) जैसे जन्माष्टमी देवोत्थापनी देवशयनी आदिमें होते हैं अतः उभय पक्षसे और शास्त्र प्रमाणोंसे गोधूलि लग्न शूद्रादिकोंके हो निमित्त है वेधादि रहित शुद्ध गोरज सङ्कट प्राप्तिमें द्विजाति भी करलेवें २

प्रश्न २ ।

गोधूलि लग्नमें कुज (मङ्गल) अष्टम है सो गोधूलि लग्न भङ्गद है ? उ० २ प्र० का—

अष्टम कुजका दोष गोधूलि लग्नमें नहीं होता फिरभी यहां भौम नीच राशिका होनेसे शुभ है । यथा—

भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्भौमोष्टमो
दोषकृत् नीचेनीच नंवांशकी शशिनि रिः
फाष्टारि दोषोऽपिन ॥ १ ॥

---

(१) केचित् क्षत्रियों में भी चातुर्मासमें विवाह करते हैं सो वह कुल प्रथा तथा देश प्रथासे करते हैं शास्त्राज्ञासे नहीं ।

(२) इस प्रश्नके उत्तरमें किराडूजी तथा रत्नजीको मौना-वलम्बी होना पड़ा और इसका उत्तर किराडूजी तथा रत्नजीके पास मौनावलम्बनके सिवाय था ही क्या ? सो उत्तर देते ।

अपरश्च कश्यपः—

अस्तगेनीचगे भौमे शत्रु चेत्र गतोऽपिवा ॥
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किञ्चिदपि विद्यते ॥ २ ॥

भस्यार्थः—भौम अस्त हो तथा नीच राशिका हो अथवा शत्रु-गृहका हो तो अष्टमभौमका दोष नहीं होता।

प्रत्युत्तर द्वितीय प्रश्नकी उत्तरका—

आपने जो भौम अष्टम का परिहार बताया सो माननीय है। परन्तु यह परिहार गोधूलि लग्नका नहीं, प्रथम तो देखिये कि आपके परिहारमें लिखा है कि "अस्तगे" अर्थात् भौम अस्त हो तो अष्टमका दोष नहीं, तो विचारिये कि सूर्य गोरजमें सप्तम रहता है तब भौम अष्टम होने पर अस्त क्यों कर माना जावे अतः आपका दिया हुआ प्रमाण गोरजमें नहीं घटता, यदि फिर भी हठ ही है तो इसी श्लोकके उत्तरार्द्धमें लिखा है कि "नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टादि दोषोऽपिन" [चन्द्रमा] नीच राशिका हो तथा नीच नवांशका हो और चतुर्थ अष्टम, द्वादशस्थ चन्द्रमाका भी दोष नहीं। तो ४-८-१२ चन्द्रमा होने पर गोधूलि लग्न मानते हो क्या? आर्ष प्रमाणोंमें तो ऐसा लिखा है कि—

"यत्रै कादशगश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयगः।
गोधूलिकातु विज्ञेया शेषा धूलिरिति स्मृता" ॥

अस्तलग्नसे द्वितीय तृतीय एकादश स्थानमें चन्द्रमास्थित होने पर गोधूलि लग्न उत्तम होता है अन्य स्थानोंमें स्थित चन्द्रमा होने पर धूलिमुख होता है ६।८।१२ होवे तब उस लग्नका सर्वथा परित्याग करना उचित है। यथा—

षष्ठाष्टमे मूर्ति गते शशंकि गोधूलिकि—
मृत्यु मुपैति कन्या। "अथवा"—
धिष्ण्यं क्रूर युतं त्याज्यं मूर्तौषष्ठाष्टगः शशी।

अतः गोधूलि लग्नमें चन्द्र ६।८।१२वें होवे तो गोधूलि भङ्ग कारक है। पूर्वोक्त प्रमाण (नीचराशि गते चन्द्रे) निरर्थक हुआ इससे प्रतीत होता है कि शास्त्रकर्त्ताको भूल होगी सो नहीं? जहां पर चन्द्र भौमको लग्नगत तथा षष्ठाष्टमत्यागा है जहांका विषय है—

"रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्चेति"

रन्ध्रनाम अष्टममें चन्द्रमाको आदि लेकर पांच अर्थात् चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, भृगु यह त्याज्य हैं परन्तु यदि वह चन्द्र और भौरा नीचराशिका हो तथा अस्त हो यहा शत्रुस्थहका होवे तो पं० लक्ष्मीनारायणजी किराडूजी तथा शिवदासजीके कथनानुसार अष्टम स्थानका दोष नहीं। अतः यह प्रकरण केवल अन्य लग्नोंके निमित्त है न कि गोधूलि लग्नमें। मङ्गल अष्टम होवे तथा चन्द्रमा अष्टम होवे तो उसे शुभ मान कर विवाहादि कराणा महा विपरीत है। यदि ऐसाही होता तो पूर्व मङ्गल और चन्द्रको त्याज्य करही दियाथा, तो फिर गोरज लग्नमें इसके त्याग करनेके वाक्य लिखनेकी क्या अपेक्षा थी? इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि जोर दोष घटि लग्नादिकोंमें लिख आये हैं तथा उन्होंका परिहार दे आये हैं वह सम्पूर्ण गोधूलि लग्नसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते इससे भौम अष्टमका दोष अवश्य गोधूलि लग्नमें है। यथा—

अस्तं याते गुरु दिवसे सौरे सार्के
लग्नान्मृत्यौ रिपु भवने लग्ने चेन्दौ।
कन्यानाश स्तनुमद मृत्युस्थे भौमे
वोढुर्लाभे धन सहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥ ५१ ॥

बृहस्पतिवारको सूर्यास्त होनेपर शुभ है, और शनिवारको सूर्य सहित शुभ है, लग्नगत चन्द्रमा होवे तो कन्याका नाश करता है, और यदि भौम लग्नगत तथा सप्तम अथवा अष्टम होवे तो वरका नाश करता है। लाभस्थान धनस्थान और तृतीयगत चन्द्र होवे तो वह लग्न शुभ है। इस पर मिताचरा टीकाकारकी सम्मतिको देखिये—"अथ गोधूलि समये अवश्य वर्ज्यानि वैश्वदेवो छंदसाह।"

अस्तंयातेति।

गोधूलि रित्यनुवर्त्तते बृहस्पतिवारे सूर्य्ये अस्तंयाते गोधूलिः शुभास्यात् नतुपूर्वं अर्द्ध यामसद्भावात्। तथा सौरे शनौ सार्कें सत्येव गोधूलिः शुभा। नत्वस्तानंतरम्। कुलिकसद्भावात्। क्रान्तिसाम्य मपित्याज्यं। तथा लग्नात्तत्सायं कालीन लग्नान्मृत्यावष्टमे रिपु भवने षष्ठे वा लग्ने एव वा चन्द्रे सति कन्या नाशः स्यात् लग्ने इति। लग्नंस्थे मदनस्थे मृत्युस्थे वा भौमे सति वोढुर्वरस्य नाशः स्यात् शेषं स्पष्टम्। अन्यच्च पीयूष धारा टीकायामपि द्रष्टव्यम्।—अथ गोधूलि समयेऽवश्य वर्ज्यं दोषान् वैश्वदेवो छन्दसाह॥ अस्तंयाते इति। गोधूलि रित्यनुवर्तते गुरु दिवसे बृहस्पतिवारे सूर्य्ये अस्तं याते सूर्यास्तादनन्तरं गोधूलिः शुभास्यात्। नतु सूर्यास्तात्पूर्वमर्द्धघटिकं गोधूलि लग्नं कार्यं मर्द्धयाम सद्भावात्। तथा सौरे सार्कें सूर्यदर्शन सहिते गोधूलिः शुभा। नतु सूर्यास्ताद नन्तरम् कुलिक सद्भावात्। उपलक्षणत्वात्

क्रान्ति साम्य मपित्याज्यम्। तथा लग्नात्सायंकालीन लग्नान्मृत्यौ-वष्टमे रिपुभवने षष्ठे वा लग्ने एव चन्द्रे सति कन्यानाशः स्यात् तदुक्तं दैवज्ञमनोहरे। कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च मूर्तौषष्ठाष्टमः शशी पंच-गोधूलिके त्याज्या अन्ये दोषाशुभावहाः। अत्र कुलिक शब्देन तत्-कालि मुहूर्त्याई यामाख्योवार दोषो गृह्यते। अन्येषांत्व सम्भवएव। केचित्वाद्य पाद्दे सार्कं शनौ विरंचि चित्र शिखण्डि सुनौ तु तुकेवलं कुलिक यामदलोपलम्भात् इति केशवार्कोक्ति वाक्ये सम्मतिः कस्मान्न भवतीत्यूचुः। तच्चिन्त्यम्। पूर्वापर ग्रन्थालोचनया तस्य पूर्वपक्ष ग्रन्थोय मन्यथा पंचम्यन्त हेतू पादान वाक्यमनर्थकंस्यात्। एत-च्चाधुनैवनिर्णेष्यते। लग्ने इति। लग्नस्थे मदनस्थे वा मृत्युस्थे भौमेसति वोढुर्वरस्य नाशो भवति॥ तदुक्तं ज्योतिः संहितासारे॥ षष्ठे ष्टमे मूर्त्तिं गते शशांके गोधूलिके मृत्युसुपैति कन्या। कुजेऽष्टमे मूर्त्तिंगतेथ वास्ते वरस्य नाशं प्रवदन्ति गर्गाः इति अन्योपि विशेषस्त-त्रैव। षष्ठाष्टमे चन्द्रज चंद्र जीवे चोणीसुते वा भृगुनन्दने वा॥ मूर्त्तौ च चन्द्रे नियमेन मृत्यु र्गोधूलिकं स्यादिह वर्जनीयम्॥ इति॥ धिष्ण्यं क्रूर युतं त्याज्यं मूर्त्तौ षष्ठाष्टमः शशी। गोरजं लग्न-प्रशं-सन्ति सन्तः शनि दिनं विना इति।

"तथाच मुहूर्त्तमार्त्तण्डेपि"—

गोधूलं पदजादिषी शुभकरं पश्चाङ्ग शुद्धौरवे,
रर्द्धास्तात्पर पूर्वताध घटिकं तत्रेन्दुमष्टारिगं।
सोग्रांगंकुजमष्टमं गुरुयमा हःपात मर्कक्रमम्,
जह्याद्विप्रमुखेऽति सङ्कट इदं सद्यौवनाद्ये क्वचित्॥१॥

अस्य व्याख्या—

अथ गोधूलि लग्नमाह गोधूलमिति। गोधूलं लग्नं सायंकाल

लिग्नं पट्ज्ञादिके हीन जातौ शुभ करं प्रोक्तं न पूर्व वर्णानाम् क्व ? पचांग शुद्धौ विवाहोक्त पचांगे अत्र पचांग शुद्धि सुंख्या। तत्र काल प्रमाणं विशेषण द्वारेणाह। कथं भूतं गोधूलं रवे अर्द्धास्तात्-सकाशात् प्राक्-परितोर्द्धं घटिकं अर्द्धघटिकायस्मिन् इत्यर्द्धं घटिकं प्राक् पंचदश पलानि परतः पञ्चदश पलानि एवमर्द्ध घटिक मित्यर्थः अत्र त्याज्यमाह:। इहास्मिन् गोधूल लग्ने षष्ठाष्टग मिन्दु चन्द्रं जह्यात्त्यजेत्। पुन: किं किं जह्यादित्याह। सो ग्रांगसुग्रग्रह-सहितं लग्नं कुजं भौम मष्टमम् गुरुयमाह गुरु शनिदिनं पातं महा-पातं सिद्धान्त गम्यं अर्कं क्रमं सूय संक्रान्तिं जह्यात्। अन्ये दोषान-त्याज्या इत्यर्थः। अथवा ज्योतिर्निबन्धेपि—

उद्वलाह तदाद्यंत लग्नं गोधूलिकंस्मृतम्।

केप्याहुर्गोरजो नेष्टं तनौ कामेष्टमे कुजे.॥१॥

मुहूर्ततत्त्वे। अष्टम अस्तक् भौमेनेष्टः अपरश्च ज्योतिर्विदाभरणे। खलपुरं त्यजेति श्लोकस्य व्याख्या।

विरति अष्टमं मङ्गलं अष्टमस्थ भौमं त्यज।

तथेदं विवाह वृन्दावनस्य टीकायामपिद्रष्टव्यम्।

षष्ठेष्टमेमूर्तिगते च चन्द्रे, — — —

गोधूलिके मृत्युमुपैति कन्या।

कुजेष्टमे मूर्त्तिगतेथवास्ते,

वरस्यनाशं प्रवदन्ति गर्गाः॥१॥

धिष्ण्यं क्रूरयुतं त्याज्यं (मूर्तौषष्ठाष्टमे चन्द्रं)

: कुजंरंध्रास्त लग्नगं।

विनारंध्रं शुभयुक्तं गोधूलं शुभदम्भ वेदित्यादीनि एतान्येव बहुसम्मतानीति चेत्तदपिन प्रत्याख्येयं। पाक्षिको पीहदोष इत्युक्तत्वात् किमतोवहूक्तैः।

अथः, षष्ठाष्टम चन्द्रादयो गोधूलिके उक्तदोषास्तेपि त्याज्या इतिसिद्धम्।

प्रश्न ३ भृगु६ है सो भी गोधूलि भङ्गद है यथा—

षष्ठाष्टमे चन्द्रज चन्द्रजीवे चोर्णीसुतेवा भृगुनन्दनेवा। मूर्त्तौच चन्द्रे नियमेन मृत्युर्गोधूलिकांस्यादिहवर्ज-नीयम् ॥१॥

भस्यार्थ—गोरज लग्नमें छठे आठवें बुध, चंद्र, बृहस्पति, भौम शुक्र (१) हो तथा लग्नमें चन्द्रमा हो तो नियम (निश्चय) करके वर कन्यामेंसे एकको मृत्यु करता है इससे उक्त दोषोंको अवश्य गोरजमें वर्जनीय है॥ १॥

तभी तो कन्याके विवाह पश्चात् मृत्यु भर रूपा भ्रम हुआ है यदि भौमादि कृत् असद्ग्रहों को शान्ति न कराते तो न मालुम क्या होता।

---

१ पाठकवृन्द विचारणीय स्थल है कि शुक्र छठे भौम अष्टम होते हुये भी ज्योतिष् शास्त्रके फलितको न माननेवाले नास्तिकजन तथा लोभी देवज्ञजन हठात् गोधुलि लग्न करा दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि कन्या अष्टम माससे ही भौम कृत् दोषके प्रतापसे आमरणान्त रोग ग्रसित होगई। ईश्वर ही इस कन्याकी रक्षा करें! क्यों नास्तिकजनों अबतो ज्योतिषका विश्वास मानोगे न?

प्रश्न ४ ।

चन्द्रसे भौम सप्तम आपके लेखानुसार यामित्रदोष आता है परन्तु मीनलग्नमें तो चन्द्रमा ११ होनेसे उक्त दोषका निवारक है। तथापि गोधुलि लग्नमें यामित्र दोष अवश्य रह जाता है।

प्रश्न ५ ।

सूर्यातिरिक्त बुधसप्तम है सोभी त्याज्य है अर्थात् लग्न भंगकारक है।

प्रश्न ६ ।

शनिपञ्चम होनेसे गोधुलि भंगद होता है देख लीजिये ज्योतिर्विदाभरणमें क्या लिखा है ?

अलमिति विस्तरेण विद्वत्सु ·

भवदीयमित्रं

ज्योतिर्विशारदोपाह्व पण्डित श्रीवंशीधरशर्मात्मज

पण्डित नारायणदास शर्मा ।

अवैतनिक उपदेशक

श्रीभारतधर्म महामण्डल ।

ठि॰ जङ्गीचबूतरा मु॰ अजमेर ।

सम्मतिपत्र मिदम्।

सम्मतिरत्र धर्म्मधुरन्धर देवज्ञवाचस्पतिवैतालीपाह्वविनायक शास्त्रिणः बनारस।

श्रीयुत् विद्वद्वरान् प्रति निवेदयामि।

आषाढ़ कृष्ण द्वितीया

भृगुदिने अर्थादद्यात्र पंचांगे विवाहलग्नद्वयमुक्तम्। तन्मे मध्ये भौमाष्टमस्थादिदोषान्वितगोधूलि लग्नापेक्षया मीनलग्नो-त्तमताद्दृष्टा ग्रंथानेकप्रमाणत्वात्। मत्संमतमेतत् मीनलग्नम् अग्रे ऽत्रकर्त्ताप्रमाणम्।

हस्ताक्षर भवदीय।

पं० रामचन्द्र शर्मणः क्षितिपिणी संस्कृत पाठशाला प्रथमाध्यापकस्य।

संमतिरत्र ज्योतिर्विद हरिदत्त शर्म्मणः

संमतिरत्रज्योतिर्विद माईदासशर्म्मणः

श्रीमत्पण्डितज्योतिर्विन्नारायणदासानां ज्योतिर्विदुषो लेखे सद्वास्य संमतिरस्तिः महर्षीणां पूर्णरीति प्रमाणकत्वात्

पं० सूर्यकिरणशर्माभिधाय।

सम्मतिरत्र ज्योतिर्विद बालचन्द्रशर्मणः जयपुर।

सम्मतिरत्र ज्योतिर्विद गुजरमलात्मजनारायण शर्मणः जयपुर

सम्मतिरत्र ज्योतिर्विद गंगाधर शर्मणः राज्य कोटा श्रीनाथजीके भण्डारके पास।

सम्मतिरत्र-ज्यो-मोंगीलाल शर्मणः राज्यकोटा केतोनीपोल भीतर लग्नशुद्धि नहीं मिलनेपर तो गोधूलि किया जाता और वह गोधूलिद्विजादिक वर्णोंके होता है ब्राह्मणोंके अत्यावश्य

कताहो तो किया जाता है नहीं तो नहीं किया जाता है अशुद्ध गोधूलिको तो करना ही नहीं चाहिये ८।१२

ह० पं० गोपालदत्तस्य कोटास्थस्य

सत्यां लग्नशुद्धौ गोधूलिको ऽसमोचोन: सम्मतिरत्रार्थं पाठको-पनामक रामलाल शर्मण: कोटा निवासी

शुभग्रहावलोकित शुभलग्नाभाव एव गोधूलिकसमय ग्रहणा-वश्यकता विवाहकार्ये सम्मतिरत्र विषये ।

लक्ष्मणाचार्यस्य नागौर (मारवार)

मैंने उभयपक्षको अवलोकन किया तो ज्ञात हुआ कि लग्नसे अष्टममङ्गल अवश्य लग्न भङ्गदकर्त्ता है यदि घटी लग्नोंमें मङ्गल नीचका हो तथा शत्रु चे त्रका हो वा अस्त होवे तो कुछ भी दोष नहीं गोरजमें तो चन्द्र तथा भौम अष्टम होवे तो अवश्य त्याज्य है।

चण्ड पञ्चाङ्ग रचयिता।

ज्योतिर्वित् पण्डित सीताराम लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी सु० रोल (मारवाड़।)

गोरजलग्नापेक्षया मीनलग्नं समीचीनं सम्मतिरत्र व्यास

रघुनाथ ज्योतिषी शर्मण: मारवाड़ मूंडवा,

सम्मतिरत्र: ज्योतिर्विद सौम्यस्वर शर्मण: गुर्वरस्य कुचामणि निवासिन: कलकत्ता प्रवासिन:।

विशेष द्रष्टव्य।

बढ़िया काम! सस्ते दाम।

गोविन्द प्रेस।

हमारे प्रेसमें सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये हिन्दी, अंग्रेजी, बङ्गलाके नये टाइप, नये बेल बूटे, नयी स्याही और नयी मेशीन आदि सब सामान नया मंगाकर नया इन्तजाम किया गया है। इसमें लफाफे पोष्टकार्ड, बिल, हुण्डी, चिट्ठी, चेक, कन्ट्राक्ट, रसीद, रिपोर्ट और पुस्तकें आदि बहुत सुन्दरताके साथ हरेक रंगकी बढ़िया स्याहीमें छापकर ठीक समय पर दे दी जाती हैं। इतना सब होने पर भी और प्रेसोंसे बहुत कम छपाई ली जाती है। एक बार अपनी इच्छानुसार काम भेजकर हमारे यहां छपाइये और देखिये कि कैसा सुन्दर और बढ़िया काम सस्ते दामोंमें होता है। सुन्दर आर्ट पेपर पर चित्रादि भी हमारे यहां छापे जाते हैं। हां, एक विशेषता यह है कि प्रूव संशोधन आदिका काम भी हमारे यहां के योग्य विद्वानों द्वारा हो जाता है। गुजराती, बङ्गला, मराठी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत आदि भाषाओंका अनुवाद भी हो सकता है।

निवेदक—

मैनेजर—भूरालाल मिश्र।

नं० ४०२ अपर चितपुर रोड, कलकत्ता।